

I 6781

ASIA ARCHIVES

२ॐ नमः श्रीमहाभैरवाय नमो ॥
देवराजसेवमानपापनांघ्रपंक
जे. बालजहोसुत्रमिन्दु. सेवरंक
पाकरं. नारदादिजोनीतुन्दवं
दितंदिगंभरं ॥ कारिकापुरा

विनायः कालभैरवंभजे ॥ १ ॥
भानुकोटिभात्करं. भवाविता
लकं परं. शिलकं ए० मि वि सिता
थदायकं त्रिलोचनं. कालका
यमंभूजासनासेकतनंदोमं

॥ कारिकापुराविनायः कारभैर
वं भजे ॥ २ ॥ मूलतं कपासदं
पाणिमादिकारणं. त्यामका
यमादिदेवमुजालं नीरामयं.
भिमविक्रमसिं विचित्रतां

ब्रवंप्रियं ॥ कारिकापुराविना
यकालभैरवं भजे ॥ ३ ॥ भुक्तिरु
क्तिदायकंप्रसन्नचारुविग्रहं. भ
क्तवत्त्वजितं. सर्वलोकद्विदं
णि एकाममहेम. ह्येकं कि

निलस्तुतं॥ काशिकापुराधिना
यकालभैरवंभजे॥ ४॥ धर्मसे
तुपारनं. त्वधर्ममार्गनासजं.
कर्मपारसमोचकं. तूतसमीदायकं
विभुं. त्वर्षवर्षकेसपाससोमि

तां त्रमं एतलं॥ काशिकापुराधि
नाथः कालभैरवंभजे॥ ५॥ भूत
संघनायकं. विसालकर्त्तृसाति
नं. काशिवासलो कपुण्येपापस्य
धकंप्रभू. निनिमार्गकोविदंपू

रासनं जगत्पति॥ काशिकापुरावि
नाथः कालमैवं भजे॥ ६॥ शुद्धतहा
समिन्नुपमजातकोतिसंतति॥ ६
रूपापनरूपापजालरूपासनं शु
क्तसिद्धिदायकं कपालमादिकाव

रं॥ काशिकापुराविनाथः कालमैव
वं भजे॥ ७॥ रत्नपादकाप्रभावसि
मरामपदयुग्मकं मयितियमीरु
दैवतं निरंजनं मत्पुदर्यनासनं
कलालदरुमिषणं॥ काशिका

पुरा विनायः कार भैरवं भजे ॥ ८ ॥
॥ काल भैरवाय कं पयति यो म
नो हरंः ज्ञान सुक्ति साधनं प्रत्त
वारु विग्रहः लोक मोह दे स्य

लोक कोप ताप नाशनं ॥ का सि
का पुरा विनायः काल भैरवं भ
जे ॥ ८ ॥ इति श्री काल भैरवं
समाप्तं ॥ ५५ ॥

धोमैत्र नैत्या तस पल मीव भ
मैत्रैत्या तस मीव या ना
क मीसा दुत के वल्ये न लोद

बाहु सा हा थाल ७०

मिहिकु मारि मिथी गुरु आना

नीलकु मारि अंकत सा हा ७

अस तं कु मारि मौरो पान ना

वातकु मारि मा हा देव को वा ना

ऊं गुरु गन पछि पै ते रा तो न

ह नीला नु गरु न ला गे त

ऊं नील ते ना थ गुरु के धा हि

ऊ फत सा हा थाल ७

ऊं वे हे रि ज मुक्ति मान य तु हु फत

इमाया
कोषया
उसिइताथिताया
मत्तायावा
षितायास्वा
नत्ताया
तथावेति

मिति
कु
मिति
कुलका

ॐ नमो विष्णु मंगल नाम ॥ मंगली भ
गवान विष्णु मंगली गह दो चो ज ॥ मंगली
पुन्दरी काक्ष्यो मंगला यत नो हरि ॥ १ ॥ म
गली लक्ष्मनो भ्राता मंगली जान किव ह
मंगली सुदरो राम मंगली हनुमत प्रीये
॥ २ ॥ मंगलं परमा मंदो मंगली परमेश्व
र ॥ मंगली श्री पद्मनाभो मंगली पद्म
लोचन मंगली कृष्णाली ॥ मंगली वि
सृभा लक्ष्मी मंगली सविदानंदो मंगली
नरकातक ॥ ४ ॥ मंगली जगदानंदो म
ंगली जगदीश्वर मंगली श्रीरंगनाथो म
ंगली प्रहसितम ॥ ५ ॥ मंगली कमलाका
नो मंगली भगवत्वरत्न मंगली कम
लासो दो मंगली कृष्णालायत ॥ ६ ॥ म
ंगली भगवान् रुद्र रुद्र मंगली विष्णु शी
वरा मंगली माधवो धीरो मंगली ध
रणि धर ॥ ७ ॥ मंगली हनुमनी नाथो
मंगली गोमती प्रीये मंगली गोकुलाधी
रो मंगली देव कि सुत ॥ ८ ॥ मंगली लोक

सासीगोमगलैधर्मवर्धनं॥मगलैसर्वेधा
र्मस्यमगलैसाधुवर्धन॥२॥यतस्त्रोत्र
मयादिच्यसर्वमगलकारक॥व्यास्यन
कथीतंउर्वमाहापातकनाशन॥१॥
येपठेत्प्रातस्तथायेदमानकालेऽ
जोतमभतुलीपरमेश्वरपुत्रभतेना
जसस्येःभवेत्तवर्धसतायुःसास
र्वरोगविवर्जितमोच्यत्सर्वपापभ्ये
विष्णुलोकेसगद्यतीर्त्ततीओविष्णु

वेदव्यासंभक्तमगलानाम्भुम्भु
ओगुहेकाक्षीदेव्योनमः॥जयजयका
लिकालरात्रिककालीपरीगतदस्य
कालीगुण्येकालीस्वकालीचलचल
दसकालीपञ्चीपञ्चेककालीवीरु
रितकलकालीकालीकायाचका
ली॥२॥मृतसीसुवदधारिसुदमाला
धीहारि॥हरिनयनहारिपरतेनानि

इ चीरि ॥३॥ नृ चो मित कमला लिखा
प्र चर्मग चीली ॥ चतुर मन मनोजे
काल काली शुका लि ॥४॥ कली तद
सकाली मुंड माला क कालि ॥५॥
गुरवर वरालि वेदे माला धका
ली ॥ कलयतु मम काली का स पा
साहे काली ॥६॥ मु मल पुलक वि
रोती सर्व संतु प्र मोती कन कन म

लय को रीती पदि म स्था प्र काली ॥

७॥ ईती श्री खोद सका लि स्तोत्र ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
कृष्णाय नमः शिवाय नमः
सर्वभूतहिताय नमः
सर्वलोकहिताय नमः
सर्वद्वेषविनाशाय नमः
सर्वकलहविनाशाय नमः

सर्वदुःखविनाशाय नमः
सर्वप्रेमवर्धन्याय नमः
सर्वशान्तिवर्धन्याय नमः
सर्वसुखवर्धन्याय नमः
सर्वसौख्यवर्धन्याय नमः
सर्वसमृद्धिवर्धन्याय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सर्वभूतहितं कुरु सर्वदा
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वपापनाशक
सर्वविघ्नहर्त्रा सर्वशोकनाशक
सर्वमङ्गलदायक

नमो भगवते वासुदेवाय
सर्वभूतहितं कुरु सर्वदा
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वपापनाशक
सर्वविघ्नहर्त्रा सर्वशोकनाशक
सर्वमङ्गलदायक

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
श्री कृष्णाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
श्री कृष्णाय नमः

I 6487

ASMA ARCHIVES
1010 211 H 116

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नाम पृष्ठाखलं कृतां ॥ कार्पासदो
णाशिखरे आसीनं ताम्रनाजने ॥ य
महं मय कुरुवा न लोहदण्डसमन्वि
तं ॥ इत्युदण्डमयं वध्वा उडुपंदरु
वतैः उडुपोपरि नाधेनुसूर्यदे

हसमुद्रवां कृत्वा प्रकल्पयेद्वा मा
छत्रोपानहसंयुतां शृंगुलीयक
वासां सिद्धासनाय निवेदयेत् ॥ ॥
ॐ नत्सदिति मृत्तसनी देहपरि
त्यागे शिवरोदनसंज्ञवां लवनां

मुविंजेदयित्वा यमार्गं नयात्
हो॥ यमद्वारमेहाद्योरेष्कृत्वा वै
नरणी नदी॥ तर्जुका मोददामि
त्वां तुभ्यवै नरणिं नमः॥ गावो
ममाग्रनेत्यादि॥ ॥ विष्णुरपदि

जश्रेष्ठनामुद्ररपहीरुणं नवार्ण
बावू॥ सदसि एणमया दत्वा गृहा
नेमानदिनमः॥ धर्मराजं च सर्वे
संवैराणां खधेनुकं। सर्वप्रदशि
णी कृत्य वासनाय निवेदयेत्॥

प्रहंसगृह्यधेनाश्च अग्रे कृत्वा
महीसुरं॥ ॥ विष्णुके त्वं प्रजासश्च
यमद्वारे महापठ॥ उत्तराणा
र्थदेवेशि वैतराण्येन मोक्षते
॥ अत्रुवुजे तं गच्छ तं सर्वगुह्य

गृहं तयेत्॥ अथ ने विष्णवे
पुण्ये व्याती पातं दिन अये॥ ॥
चन्द्रसूर्यो परागे च संक्रान्तौ
दशं वासरे अन्येषु पुण्यकाले
षु दीयते दावमुत्तमं॥ ॥ चतु

धोष्यायेव॥ काश्यपात्रे घनः
 स्थाप्यैव नरण्या निमिन्नकं
 नाचमारोहन कुर्या पूजयेद्
 रुडधजं॥ प्रवसागर मगाना
 शोकतापो मिः दुःखिता॥ धर्म

प्रवृत्तिना नाना नौरेका हि ज
 नादनः॥ ५ ओहो यथा शक्त
 कपूरम २ १३
 कुंकु म २ १४
 केशर म १ कुंगा रवाना
 कल्लर म ४ समाजाल
 कविकरबला

श्रीघंड मं ४ लुयाल श्रीनारां
 कुशा १ पूजा जोल येन
 काशा २ लुदसिणा कापक १ गव
 सामो ३ कापोक २ यखवा ॥
 मूर ४ वाप कोदान १५
 छो ६ ने छो कापालको १६
 घनेषोदश

ने छो ७ ले ट दानजुल
 श्रीहो ८ तिज १० वेतरणीसं
 कपोक १ नयासासं ९
 लादिवा. घनदीप ६ लुयाकाका ३
 दलोव १ अन्नय श्रीहोयारव ४
 याशक्त. थाली कासरबलाग १
 तली. नाक्या. उध्या घेल. लुयाति

वाता-खला-कथुला
वातावा-वस्त्रजोलं-श्रं
वस्त्राधुनी
मालमुखसुविजोलं
कापोक
नसिआदिफलवाद्य
नासाकस्वांमालत्वां॥

लका
हाकुफापकर
सिजयावापी
गायग्व
कपास
सिजयाखार
लुयानमसजा
मायादह

कापो-छत्रपा-११

नुयानाव
पाका
लका
कसा
ग्रोग
वस्त्र
लुयाना
रायमल
लुकी ४

अथ भूमी दाने ॥ आदोगणेशप
जा ॥ भूमी मृत्तिका मादय सुगंधि
द्रव्येनालोद्योति जगद्वशात्
॥ शुचायुद्धमृत्ता वं जगन्भी
कृत्य ॥ नच भूमी समं दानं नच

भूमि समागति नच भूमि समं पु
ण्यं नच भूमि समा विधिः ॥ क
र्ततेः दशाहुणवते नित्यं भूदान
फलमाप्नुयात् ॥ ॥ भूम्यादि पूजा
विधाय वास्तवा पूजा कृत्वा द

भोदकग्रहाणंदभोजथा॥ कुशो
कासानिलादुर्वाधान्यगोधूमवै
यवासौवन्नरजतेनामुंदशद
भाप्रकार्तिना॥ ॥ नत्रमान
वोक्तवाक्यं. अथेत्यादिदेश

कालौ संकीर्त्यनामजोत्रे शार्य
॥ अथामुकसमयेवाञ्छितफ
लावाप्तिकामइमानियत्तरखा
भूमिंप्रियदत्तोविष्णुदेवनाम
मुक्तनत्रायेत्यादि॥१॥ मानवो

रूपफलप्राप्तये नथाव ॥ स्वर्गलो
कमहीतु कामेति याज्ञवल्क्यो
रूपफलप्राप्तये नथाव ॥ स्वर्गलो
कमहीतु कामेति यमोक्तयला
प्तये नथाव ॥ २ ॥ ब्रह्मलोकम

हीतु कामेति यमोक्तफलाप्रा
प्तये नथाव ॥ ३ ॥ सर्वपापविमुक्ति
विष्णुलोकगमनकामेति आदि
त्यपु रागो रूपफलप्राप्तये च ॥ ४ ॥
षष्टिवर्षसहस्रावधि न स्वर्गा

विकरेण कवास कामे निवृ हस्य
कुक्कुफला सये च ॥ ५ ॥ सर्वलो
काधिकरण क सुखित्व व द्य
सहस्रावच्छिन्न नुने जत्क विमा
नकरण क कामरूप व दान्मी

यविकरण मनुख्यज नो त्ररसन
काम भुग्य ही प्राप्ति कामे निस्क
एउपुगणोक्त फला सये च ॥ ६ ॥
शिवपुरगमन पूर्व क हर्ष व द
लीय क स्या पुन सहस्र संख्या क

वतुर्दशसहस्रावच्छिन्नयथा
सुखिवपुरवासेनसुरवरवि
वरणोनरमहीनलप्राप्तिप
र्वश्रेष्ठवर्णजन्मपरमसुखा
पुनत्वकामेनिशिवपुराणोक्त

फलाप्तयेव॥७॥ आधिनाति
कआधिदेविकआध्यात्मिको
त्पानस्तुचिन्तयेत्प्रसमनकामे
निनरसिंहपुराणोक्तफलप्रा
प्तयेव॥८॥ उत्तमममिलानै

हिका मुष्मिक व श्रद्धा नि को
त्यान स वि न दोष पु स मन कामे
ति न र सिं ह पु री म्मा ल क त्व म
हा य रा ष्या ति का मे ति म हा भा
र नो क्त फ ला स्र ये ॥ ५८ ॥ एक विं

श ति से र्वा त्प कु लो द्र र ण का
मे ति वा द्र स्य नी यो क्त फ ला स्र ये
व ॥ १० ॥ सर्व पाप वि मु क्त मे ति
वि ह्व ध म्मा त्र रो क्त फ ला स्र ये
॥ ११ ॥ स्व र्गा धि क र ण का दि त्प

तुल्यनेजादायामानत्वकामेति,
आहित्वमिसंप्रदानोक्तफलम
ये॥१२॥ अथैकनामौकसमया
वद्विन्नस्वर्गमहीनत्वकामेति
वाचस्पुक्तफला॥१३॥ अथ

धिकरणराजत्वचननकामेति
पानाखेणोक्तफ॥१४॥ त्रिपिष्टय
गमनकाधीकरणकवि विधमा
मनोगसेवमानमहातुगात्मा
यानवधिकालवल्लोकवात

कामश्मामियत्तख्याकोऽमिं
प्रियदत्तां विष्णुदेवतां यथा ना
मगोत्रायवाहणाय हरेदे इति
त्यजेत्तत्तत् ॥ ॥ दक्षिणाग्रह
नान्नं भूमीपदक्षिणान्वंवा ॥ ॥

काञ्चतोपथवाभूमीनानां
न्यंदेयद्विजयनयेति ॥ ॥ ग्रही
ताकोदादि ॥ निययेत् ॥ ॥ वृ
द्धवाञ्चिदेगोचर्ममिगभूदा
नं ॥ यत्किञ्चिद्विकुरुते पापं ज

अप्रभृतिमातवः अपि गोच
र्ममात्रेन भूमिदानेन सुख
ति॥ ॥ गोचर्मो यथा ॥ गवा
शतद्वयं चैको यत्र तिष्ठेद
नं द्विजगदि गोचर्यमात्रं

अप्राकृर्वेदविदोजना॥ ॥ द
शहस्तेन वंशेन दशवधो समं
तमप्राकृर्वेदविदोजना॥ ॥
दशहस्तेन वंशेन दशवंशं
समं ततः पञ्चवाप्यद्विव्यं द

श्री गणेश

प्राद्वेन गोवर्गमुच्यते ॥ एको
ध्वीया यदुत्पन्नं वस्तु तत्तं
लंगोवर्गमात्रासीत्कोकादा
यदिपङ्क ॥ ॥ प्रत्यन्तेस्थापन
शिवं ब्राह्मणेन सने यदि। क

र्ममार्जनकरं त्रं पोषा वर्गक
दावनगुरुससुरदौहिमित्रमि
त्रपौरोहितस्तथा भृत्यमोरक
उत्पन्नानि पोषा वर्गस्तथा ह्रमः ॥ ए
थिनी वै हवी प्रोक्ता एथा विष्णु प
जिना एथि व्याधु प्रदानेन प्रीय
ता ने जना दनः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥